19

भ्वादिप्रकरण में - लिङ् लुङ् के सूत्रशेष

पूर्व पाठ में भू धातु को लेकर रूप सिद्ध किये गये। उसके बाद धातुक्रम को छोड़कर मुख्य प्रक्रिया के आधार पर सूत्र प्रदर्शित किये गये। इस पाठ में लिङ् लकार के उदाहरण लेकर अकृत्सार्व-धातुकयोर्दीर्घः सूत्र को उपस्थित किया गया। इसका अन्य सूत्रों में प्रयोग परिलक्षित होता है।

लुङ् लकार सर्वविधभूतकाल को प्रदर्शित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इसमें ईट् आगम, इट् आगम, सिच् लोप आदि कुछ विशेष कार्य होते हैं। इस प्रकार लुङ् में च्लि, च्लि को सिच्, अङ् चङ् आदेश होते हैं। सिच् परस्मैपद परे हो तो वृद्धि होती है। इस पाठ में यह वृद्धि प्रकरण मुख्य रूप से उपस्थित है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- तिङन्त प्रकरण के लुङ् लिङ् के सूत्रों को जानेंगे;
- लुङ् के धातुरूपों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे;
- लुङ् लकार के सूत्रों की व्याख्या जानेंगे;
- लुङ् में वृद्धिप्रकरण के स्पष्ट ज्ञान को जानेंगे;
- वृद्धि प्रकरण में बहुत से सूत्रों में बाध्यबाधकभाव को जानेंगे;
- लुङ् लकार के रूपों का व्यवहार में प्रयोग कर सकेंगे।

लिङ्

19.1 अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः॥ (7.4.25)

सूत्रार्थ - यकार जिस के आदि में हो ऐसे प्रत्यय के परे होने पर अजन्त अंग को दीर्घ हो जाता है परन्तु कृत् और सार्वधातुक प्रत्यय में नहीं होता।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अजन्त को दीर्घ किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। अकृत्सार्वधातुकयोः (7/2), दीर्घः (1/1)। अयङ् यि क्ङिति सूत्र से यि (7/1) पद आता है। अगंस्य (6/1) का अधिकार है। इस सूत्र में स्थानी का साक्षात् उल्लेख नहीं है। कृत् च सार्वधातुक च कृत्सार्वधातुके इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः। न कृत्सार्वधातुके अकृत्सार्वधाके तयोः अकृत्सार्वधातुकयोः नेतत्पुरूषः समासः। प्रत्यय परे होने से ही अंग संज्ञा उत्पन्न है। प्रत्यये से सप्तम्यन्त पद का आक्षेप किया जाता है। पद योजना होती है। अचः अंगस्य दीर्घः यि प्रत्यये अकृत्सार्वधातुकयोः। अचः अंगस्य यहां अचः विशेषण है। अतः तदन्तविधि से अजन्तांगस्य अर्थ प्राप्त होता है। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से अन्त्य अल् के स्थान पर आदेश होता है।

यि प्रत्यये ये दोनों सप्तम्यन्त पद है। अतः तदादि विधि होती है। जिससे यकारादि प्रत्यय परे हो पर अर्थ प्राप्त होता है।

सूत्रार्थ होता है - य् से शुरू होने वाला प्रत्यय परे हो तो अजन्त अंग को दीर्घ होता है। परन्तु यह दीर्घ कृत् एवं सार्वधातुक प्रत्यय परे हो तो नहीं होता।

उदाहरण - क्षीयात्।

सूत्रार्थसमन्वय - क्षयार्थक क्षि धातु से आशिषिलिङ्लोटौ सूत्र से आशीर्लिङ् में तिप् को यासुट् आगम, इतश्च से तिप् के इकार का लोप होकर क्षि+यास्+त्, सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण प्राप्त किन्तु किदाशिषि से कित् होने से क्ङिति च से गुण निषेध। लिङाशिषि से तिप् की आर्धधातुक संज्ञा। यासुट् सहित तिप् प्रत्यय यास्त् प्रत्यय है और वह यकारादि भी है। अतः अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से षकारोत्तर इकार को दीर्घ होकर क्षी+यास्+त् तथा संयोग के सकार का लोप होकर क्षीयात् रूप सिद्ध होता है।

आशीर्लिङ् में क्षिधातु के रूप - **क्षीयात् क्षीयास्ताम्, क्षीयासुः। क्षीयाः क्षीयास्तम् क्षीयास्त। क्षीयासम्, क्षीयास्व, क्षीयास्म।**

19.2 अस्तिसिचोऽपृक्ते॥ (7.3.96)

सूत्रार्थ - विद्यमान सिच् तथा अस् धातु से परे अपृक्त हल् को ईट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस से ईट् का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। अस्तिसिचः (5/1) अपृक्ते (7/1)। उतो वृद्धिर्लुकि हलि सूत्र से हलि (7/1) पद की अनुवृत्ति

टिप्पणियाँ

है। ब्रुव ईट् सूत्र से ईट् पद आता है। अस्तिश्च सिच् च अस्तिसिच्, तस्माद् अस्तिसिचः इति समाहारद्वन्द्वसमासः। अस्ति से इक् श्तिपौ धामुनिर्देशे से असभुवि ये अदादिगणीय धातु का निर्देश है। अपृक्त एकाल् प्रत्ययः सूत्र से एकालात्मक प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा का विधान किया जाता है। सूत्रार्थ होता है - विद्यमान सिच् और अस् धातु से परे एकाल् प्रत्यय अपृक्त हल् को ईट् का आगम होता है। तथा ईट् टित् होने से आद्यन्तौटकितौ की परिभाषा से आदि अवयव होता है।

इस सूत्र में अस्तिसिचः पंचम्यन्त पद है अपृक्ते सप्तम्यन्त पद है। अतः पर का कार्य होगा या पूर्व का, यह अनियम हो जाता है। अनियमे नियम कारिणी अस्ति परिभाषा से उभयनिर्देश में पंचमी बलवान होती हे। अर्थात् पंचमी निर्देश होने से पर कार्य होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - अत् धात्वर्थ व्यापार के भूतकाल की विवक्षा में लुङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लुङ् होकर अत्+ल् तथा प्रथमपुरुष एकवचन की विवक्षा में तिप् होकर अत्+ति। उसके बाद इतश्च से ति के इकार का लोप अत्+त्। कर्त्तरिशप् से शप् आगम प्राप्त, लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय होकर अत्+च्लि+त्। च्लेः सिच् सूत्र से च्लि को सिच् होकर अत्+स्+त्। उसके बाद आडजादीनाम् से आट् का आगम, आटश्च से वृद्धि होकर आत्+स्+त् सिच् आर्धधातुक वलादि होने से इट् आगम, अनुबन्ध लोप आत्+इ+स्+त्। यहां तिप् का तकार एकाल् प्रत्यय होने से अपृक्त संज्ञक है और विद्यमान सिच् से परे है। अतः प्रकृत सूत्र से ईट् आगम तथा अनुबन्धलोप होकर आत्+इस्+ईत् स्थिति बनती है। तब-

19.3 इट ईटि॥ (8.2.28)

सूत्रार्थ - इट् से परे सकार का लोप हो यदि ईट् परे हो तो।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सकार लोप होता है। इस सूत्र में दो पद है। इटः (5/1), ईटि (7/1)। रात्सस्य सूत्र से सस्य (6/1) पद आता है। संयोगान्तस्य लोपः सूत्र से लोपः (1/1) पद की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है - इट् से परे सकार का लोप हो यदि उससे पर ईट् हो तो। अर्थात् इट् एवं ईट् के मध्य सकार का लोप होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व में आत्+इस्+ईत् स्थिति में इट् से परे सकार है और उस से परे ईट् है अतः इस सूत्र 'इट ईटि' से सकार का लोप होकर आत्+इ+ईत् बनता है। यहां अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ प्राप्त है किन्तु ईट ईटि (8/2/28) सूत्र असिद्धकाण्डीय है। क्योंकि अकः सवर्णदीर्घः सपादसप्ताध्यायीस्थ सूत्र के प्रति इट ईटि सूत्र असिद्ध है। अतः सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वाच्यः वार्तिक से एकादेश करना चाहिए यदि इट ईटि सूत्र से सिच् का लोप सिद्ध मानना चाहिए। इस प्रकार आत्+इस्+ईत् स्थिति में सवर्णदीर्घ होकर आत्+ईत् आतीत् रूप सिद्ध होता है।

आतिष्ठाम् - अत् धातु से पूर्ववत् लुङ् में प्रथमपुरूषद्विवचन की विवक्षा में तस् प्रत्यय, तस् को ताम् आदेश, शप् को च्लि, चिल का सिच्, इट् आगम तथा अंग को आट् होकर आ+अत्+ताम् = वृद्धि, आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार, ष्टुत्व आत्+इष्+टाम्=आतिष्टाम् रूप सिद्ध होता है।

आतिषुः - पूर्ववत् अत् धातु लुङ् में प्रथमपुरूषबहुवन में झि प्रत्यय, च्लि, च्लि को सिच्, इट् आगम, अंग को आट् आगम्, वृद्धि होकर आत्+इ+स्+सि स्थिति में -

19.4 सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च॥ (3.4.109)

सूत्रार्थ - सिच् अभ्यस्त तथा विद् धातु से परे ङित् लकार में झि को जुस् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से जुस् होता है। इसमें दो पद है। सिजभ्यस्तविदिभ्यः (5/1) च अव्ययपद। नित्यं ङितः सूत्र से ङितः (6/1) की अनुवृत्ति होती है। लस्य (6/1) का अधिकार है। झेर्जुस् इस सूत्र की अनुवृत्ति होती है। झेः (6/1), जुस् (1/1)। सिच् च अभ्यस्तं च विदिश्च सिजभ्यस्तविदयः, तेभ्यः सिजभ्यस्तविदिभ्यः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। सूत्रार्थ होता है - सिच् अभ्यस्तसंज्ञक और विद् धातु से परे ङित् लकारों में झि को जुस् आदेश होता है।

विद् धातु धातु पाठ में पांच स्थलों पर विद्यमान है जैसे

विद ज्ञाने (अदादि. प.प.)	वेत्ति वित्तः विदन्ति,
विद सत्तायाम् (दिवादि. आ.प.)	विद्यते विद्येते विद्यन्ते,
विद विचारणे (रुधादि आ.प.)	विन्ते विन्दाते विन्दते,
विद्लृलाभे (तुदादि. उ.प.)	विन्दति। विदन्ते,
विद चेतनाख्यानविवासेषु (चुरादि. आ.प.)	वेदयते।

इसमें से विद ज्ञाने धातु ही ग्राह्य है।

उदाहरण - क्षीयात्।

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व में आत्+इस्+झि स्थिति में झि के स्थान पर सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च सूत्र से जुस् अनुबन्ध लोप आत्+इस्+उस्। आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार एवं सकार को विसर्ग होकर आातिषुः रूप सिद्ध होता है।

अत धातु के अन्यरूप स्वयं अभ्यास करे।

लुङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	आतीत्	आतीष्टाम्	आतीषुः
मध्यपुरुषः	आतीः	आतीष्टम्	आतीष्ट
उत्तमपुरुषः	आतीषम्	आतीष्व	आतीष्म

पाठगत प्रश्न 19.1

1. क्षीयात् में ईकार दीर्घ किस सूत्र से होता है?
2. अस्तिसिचोऽपृक्ते सूत्र का अर्थ लिखो?
3. इट् व ईट् के मध्य सकार का लोप किस से होता है?
4. अत् धातु से लुङ् में अत्+इस्+ईत् स्थिति में सिच् का लोप किस से होता है?
5. आतिषुः में झि को जुस् किस सूत्र से होता है?
6. क्षीयात् में कौन सा लकार है?

   1. विधिलिङ 2. लृट् 3. आशीर्लिङ 4. लट्

7. अत् धातु से लुङ् मे रूप नहीं है।

   1. आतिषुः 2. आतीत 3. आतीषुः 4. आतीः

8. विद् धातु कितनी है।

   1. 3 2. 4 3. 5 4. 6

19.5 सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ (7.2.1)

सूत्रार्थ - परस्मैपद प्रत्यय जिस से परे हो ऐसे सिच् के परे रहते इगन्त अंग के स्थान पर वृद्धि हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं। सिचि (7/1) वृद्धिः (1/1), परस्मैपदेषु (3/1)। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। साक्षात् स्थानी का निर्देश नहीं किन्तु वृद्धि विधेयपरे से वृद्धि पद का उच्चार्य होने से वृद्धि का विधान है। अतः इको गुणवृद्धि इस परिभाषा से इकः इस षष्ठ्यन्त पद उपस्थापित किया गया। प्रत्यय परे होने से अंग संज्ञा उत्पन्न होती है। अतः प्रत्यये सप्तम्यन्त पद का आक्षेप किया जाता है। यह अंगाक्षिप्त कहा जाता है। उसका प्रत्ययों में सप्तमीबहुवचनान्तता से विपरिणाम किया जाता है। पद योजना होती है इकः अंगस्य वृद्धिः सिचि पदस्मैपदेषु प्रत्ययेषु इति।

यहां इकः अंगस्य दोनों समान विभक्ति पद है। अंगस्य पद विशेष्य है और इकः पद उसका विशेषण है। इससे तदन्तविधि से इगन्तागंस्य अर्थ प्राप्त होता है। इगन्त अंग का अल्समुदायबोधक होने से स्थान षष्ठी सुनी जाती है। इस प्रकार वृद्धि आदेश एकाल् है। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से इगन्त अंग अन्त्य इक् को वृद्धि होती है। उससे अर्थ होता है - परस्मैपद प्रत्यय जिस से परे हो ऐसे सिच् के परे रहते इगन्त अंग के स्थान पर वृद्धि होती है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - क्षयार्थक क्षि धातु से लिङ् में तिप्, अनुबन्ध लोप, इतश्च से इकार लोप, च्लि प्रत्यय तथा च्लि को सिच् होकर क्षि+स्+त् स्थिति में लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात: सूत्र से अंग को अट् आगम, आर्धधातुकस्येड्वलादे: सूत्र से सिच् को इट् का आगम प्राप्त किन्तु क्षि धातु उपदेश में अनुदात्त एकाच् होने से इट् आगम निषेध होकर अक्षि+स्त्। विद्यमान सिच् से परे अपृक्तस्य अस्तिसिचोऽपृक्ते सूत्र से ईट् आगम होकर अक्षि स् ईत् स्थिति में इगन्त अंग अक्षि, उसके बाद सिच्, उसके बाद, परस्मैपद है अत: सिचि वृद्धि: परस्मैपदेषु से वृद्धि होकर अक्षै+स्+ईत् तथा आदेश प्रत्यययो: से सकार को षकार होकर अक्षैषीत् रूप सिद्ध होता है।

क्षि धातु से लुङ् में रूप-

लुङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अक्षैषीत्	अक्षैष्टाम्	अक्षैषु:
मध्यपुरुष:	अक्षैषी:	अक्षैष्टम्	अक्षैष्ट
उत्तमपुरुष:	अक्षैषम्	अक्षैष्व	अक्षैष्म

19.6 वदव्रजहलन्तस्याच:॥ (7.2.3)

सूत्रार्थ -परस्मैपदपरक सिच् परे हो तो वद् व्रज् तथा हलन्त अंगों के अच् के स्थान पर वृद्धि आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। वदव्रजहलन्तस्य (6/1), अच: (6/1)। सिचि वृद्धि: परस्मैपदेषु सूत्र से सिचि (7/1), वृद्धि: (1/1), परस्मैपदेषु (7/3) इन तीन पदों की अनुवृत्ति होती हे। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। वदश्च व्रजश्च हलन्तश्च वदव्रजहलन्तम् इति समाहारद्वन्द्वसमास:। तस्य वदव्रजहलन्तस्याच: इति। वद व्रज इन में अन्त्य अकार उच्चारणार्थ है। अंगाक्षिप्तम प्रत्यये इसका प्रत्ययेषु में सप्तमी बहुवचनान्त से विपरिणाम होता है। सूत्रार्थ होता है - वद् व्रज् धातु एवं हलन्त को अंग अच् के स्थान पर वृद्धि होती है। यदि सिच् परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो। यह वृद्धि हलन्तलक्षणा वृद्धि कही जाती है।

वद व्रज का सूत्र में उपादान का प्रयोजन - वस्तुत हलन्त अच् को वृद्धि कहने पर वद् वज्र ये दो भी हलन्त धातु कहने पर वृद्धि हो। अत: सूत्र में दोनों की पृथक् कहने का क्या प्रयोजन है-इसक विषय में कहा जाता है कि यह वृद्धि सिच् इट् आदि है। यदि इडादि नहीं है तो भी होती है। परन्तु आगे नेटि सूत्र से इडादि सिच् में हलन्त अच् को वृद्धि का निषेध होता है। वद् एवं व्रज् दोनों सेट् धातु है। अत: यहां इडादि सिच् प्राप्त होता है। उससे नेटि सूत्र से वृद्धि निषेध प्रसज्य है। परन्तु वद् वज्र दोनों धातुओं को वृद्धि इष्ट है न की वृद्धि निषेध। इस विशेषता के कारण सूत्र में दोनों को ग्रहण किया है। इससे दोनों को निर्बाध वृद्धि होती है। अत: वद् व्रज् दोनों में नेटि सूत्र से वृद्धि निषेध रोकने के लिए दोनों का सूत्र में ग्रहण करना प्रयोजन था।

कटै वर्षावरणयो: - इस धातु के एकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा है। यह एदित् धातु हे। कट् शेष बचता है। मुखसुखार्थ के लिए अकार श्लेष किया गया है। उससे कट बहुधा

टिप्पणियाँ

अकारान्तत्व से प्रकटित दिखाई देती है। कटति। चकाट। कटिता। कटिष्यति। कटतु। अकटत्। कटेत्। कट्यात्।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - कट् धातु से लुड् में तिप्, तिप् के इकार का इतश्च से लोप, च्लि प्रत्यय, च्लि को सिच् होकर कट्+स्+त्। लुङ् में अट् का आगम, इट् आगम होकर अकट्+इस्+त् यहां विद्यमान सिच् से पर अपृक्त हल् तिप् के तकार को अस्तिसिचोऽपृक्ते सूत्र से ईट् आगम होकर अकट् इस्+ईत् यहां हलन्त अकट् है उससे इट् सहित सिच् और उससे परे परस्मैपद है। अतः वदव्रजहलन्तस्याचः सूत्र से अच् ककारोत्तर अकार को वृद्धि प्राप्त है तब।

19.7 नेटि॥ (7.2.8)

सूत्रार्थ - इडादि सिच् परे होने पर हलन्त धातु के स्थान पर वृद्धि नहीं होती।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है। न अव्ययपद, इटि (7/1)। वदव्रजहलन्तास्याचः सूत्र से हलन्तस्य (6/1) पद आता है। सिचि वृद्धि परस्मैपदेषु सूत्र से सिचि (7/1), वृद्धि (1/1) परस्मैपदेषु (7/3) इन तीन पदों की अनुवृत्ति होती है। अंगस्य का अधिकार है। अंगाक्षिप्तम् प्रत्यये इसका प्रत्ययेषु से सप्तमीबहुवचनान्ता से विपरिणाम होता है। पद योजना होती है - इटि सिचि परस्मैपदेषु प्रत्ययेषु हलन्तस्य अंगस्य वृद्धिः न। इटि सिचि ये दो सप्तम्यन्त पद है। इट् यह अल् बोधक शब्द होने से सप्तमी सुनी गई है। उससे तदादिधि होती है। इस प्रकार इडादि सिच् में यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - इडादि सिच् परे होने पर हलन्त धातु के स्थान पर वृद्धि नहीं होती है। अर्थात् इस प्रकार की स्थिति में हलन्त लक्षणा वृद्धि का निषेध किया जाता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- पूर्व अकट्+इस्+ईत् स्थिति में हलन्तलक्षणा वृद्धि प्राप्त परन्तु यहां सिच् इडादि है। अतः नेटि सूत्र से वृद्धि निषेध प्राप्त हो तब।

19.8 अतो हलादेर्लघोः॥ (7.2.7)

सूत्रार्थ -हलादि अंग को लघु अकार के स्थान पर विकल्प से वृद्धि होती है। परस्मैपदपरक इडादि सिच् परे हो तो।

सूत्रार्थव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से वृद्धि होती है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अतः (6/1) हलादेः (6/1) लघोः (6/1)। नेटि सूत्र से नेटि (7/1) की अनुवृत्ति है। सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु सूत्र से सिचि (7/1) वृद्धिः (1/1) परस्मैपदेषु (7/1) इन तीनों पदों की अनुवृत्ति है। ऊर्णोतेर्विभाषा सूत्र से विभाषा (1/1) पद आता है। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। अंगाक्षिप्तम प्रत्यये इसका प्रत्ययेषु में सप्तमी बहुवचनान्त से विपरिणाम होता है। पदयोजना है - इटि सिचि परस्मैपदेषु प्रत्ययेषु हलादेः अंगस्य लघोः अतः वृद्धिः विभाषा। इटि सिचि यहां तदादिविधि से इडादि सिच् में यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे अर्थ होता है। इडादि सिच् परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो हलादि लघु अंग के अकार के स्थान पर विकल्प से वृद्धि होती है।

ह्रस्व लघु सूत्र से लघु संज्ञा का विधान किया जाता है। इस प्रकार संयोग परे न होने पर पूर्व ह्रस्व लघुसंज्ञक होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- पूर्व अकट्+इस्+ईत् स्थिति में हलन्तलक्षणा वृद्धि प्राप्त परन्तु नेटि से वृद्धि निषेध प्राप्त। यहां हलादि अंग है, ककरोत्तर अकार लघु संज्ञक है। इडादि सिच् परे है। अतः अतो हलादेर्लघोः सूत्र से लघु अकार को विकल्प से वृद्धि प्राप्त। तब-

19.9 ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्॥ (7.2.5)

सूत्रार्थ - हकारान्त, मकारान्त, यकारान्त, क्षण्, श्वस्, जागृ, वि प्रत्ययान्त, श्वि तथा एदित् अंगों को वृद्धि नहीं होती परस्मैपदपरक इडादि सिच् प्रत्यय परे हो तो।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि का निषेध होता है। इस सूत्र में एक षष्ठी बहुवचनान्त पद है। ह् च म् च् य् च इति ह्मयः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। ह्मयन्तो येषां ते ह्मयन्ताः इति बहुव्रीहिसमास। एत् इत् यस्य स एदित् इति बहुव्रीहिसमासः। ह्मयन्ताः च क्षण् च श्वस् च जागृ च णिश्च श्विश्च एदित् च इति ह्मयन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदितः तेषाम् इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। यहाँ णि प्रत्ययग्रहणेन प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् परिभाषा से तदन्तविधि से ण्यन्त का ग्रहण होता है। सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु सूत्र से तीनों पदों का ग्रहण होता है। अंगस्य का अधिकार है। उसका षष्ठीबहुवचनान्त से विपरिणाम होता है। अंगाक्षिप्तम् प्रत्यये इसका प्रत्ययेषु से सप्तमी बहुवचनान्त से विपरिणाम होता है तब सूत्रार्थ होता है - हकारान्त, मकारान्त, यकारान्त, क्षण् धातु, श्वस् धातु, जागृ धातु, ण्यन्त, श्वस् धातु तथा एदित् अंग को वृद्धि नहीं होती यदि इडादि सिच् परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो। अर्थात् जिस अंग के अन्त में हकार मकार यकार क्षण् श्वस् जागृ ण्यन्त धातु श्वि धातु एदित् धातु होती है। उस अंग को वृद्धि नहीं होती यदि उससे परे इडादि सिच् परस्मैपद प्रत्यय परे हो।

उदाहरण - अकटीत्

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व अकट्+इस्+ईत् स्थिति में अतो हलादेर्लघोः सूत्र से लघु अकार को विकल्प से वृद्धि प्राप्त। यहां कट् धातु एदित् है अतः प्रकृत सूत्र से वृद्धि का निषेध होता है। वहां इट् ईटि सूत्र से इट् से परे सकार का लोप होकर अकट्+इ+ईत् तथा सवर्ण दीर्घ होकर अकटीत् रूप सिद्ध होता है।

कट् धातु से लुङ् में रूप-

लङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अकटीत्	अकटीष्टाम्	अकटीषुः
मध्यपुरुषः	अकटीः	अकटीष्टम्	अकटीष्ट
उत्तमपुरुषः	अकटीषम्	अकटीष्व	अकटीष्म

टिप्पणियाँ

इडादि या अनिडादि सिच् हो तो सिचिवृद्धिः परस्मैपदेषु सूत्र से इगन्त अंग को वृद्धि की जाती है।

उसी प्रकार हलन्त धातुओं के अच् को वृद्धि वदव्रजहलन्तस्याचः से होती है। यहाँ भी इडादि अथवा अनिडादि सिच् हो तो।

इडादि सिच् परस्मैपद परे हो तो हलन्तलक्षणा वृद्धि का नेटि से वृद्धि निषेध किया जाता है। अतो हलादेर्लघोः सूत्र से हलादि लघु के अकार को विकल्प से वृद्धि होती है। नेटि से इसका निषेध किया जाता है, वह यदि हलादि लघु अकार वत् हो तो। उसको विकल्प से वृद्धि होती है।

इस प्रकार हलन्त लक्षणा और इगन्तलक्षणा वृद्धि होती है। पुनः इडादि सिच् परे हलन्तलक्षणा वृद्धि का निषेध होता है। कुछ को विकल्प से वृद्धि होती है। इनमें जिन अंगों के अन्त में हकार मकार यकार क्षण् श्वस् जागृ ण्यन्त धातु श्विस् धातु एदित् धातु है उनके अंगो को वृद्धि को निषेध होता है।

वहां हलन्तस्य अचः सूत्र से वद्व्रज् धातुओं को वृद्धि सिद्ध होती है। फिर भी पृथक् उपादान किया गया है। नेटि सूत्र से इडादि सिच् परे हलन्त को वृद्धि का निषेध होता है। उससे वद्व्रज् को भी सेट होने से वृद्धि निषेध प्राप्त है। अतो हलादेर्लघोः सूत्र से विकल्प से लघु अत् को वृद्धि प्राप्त है। उससे वद्व्रज् को विकल्प में वृद्धि प्राप्ति में वद्व्रज्हलन्तस्याचः सूत्र उपादान है। उससे दोनों को नित्य वृद्धि होती है।

19.10 पुषादिद्युताद्यॄलृदितः परस्मैपदेषु॥ (3.1.55)

सूत्रार्थ - श्यन् विकरण वाले पुष् आदि धातु और द्युत् आदि तथा लृदित् धातुओं से परे च्लि के स्थान पर अङ् आदेश हो जाता है परस्मैपद प्रत्ययों के परे होने पर।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अङ् का विधान है। इस सूत्र में दो पद हैं। पुषादिद्युताद्यॄलृदितः (5/1), परस्मैपदेषु (7/1)। पुष आदिः येषा ते पुषादयः इति बहुव्रीहिसमासः। द्युत् आदि येषां ते द्युतादयः इति बहुव्रीहिसमासः। लृत् इत् यस्य स लृदित् इति बहुव्रीहिसमासः। पुषादयश्च द्युतादयश्च लृदित् च एषां समाहारः पुषादिद्युताद्यॄलृदित् इति समाहारद्वन्द्वसमासः। तस्मात् पुषादिद्युताद्यॄलृदितः। च्लेः सिच् सूत्र से च्लेः (6/1) पद की अनुवृत्ति है। अस्यतिवक्तिव्यातिभ्योऽङ् सूत्र से अङ् (1/1) पद की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है। पुषादि, द्युतादि और लृदित् धातुओं से परे च्लि के स्थान पर अङ् आदेश हो यदि परस्मैपद परे हो तो।

पुषादि धातु भ्वादिगण, दिवादिगण, क्र्यादिगण और चुरादिगण में पठित हैं परन्तु व्याख्यानाधारणे अर्थ में केवल श्यन् विकरण वाली दिवादिवाण की धातु ही ग्राह्य है।

उदाहरण - अगमत्

सूत्रार्थ समन्वय - गम्लृ गतौ धातु लृदित् गत्यार्थ गम् धातु से लुङ् में प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय, च्लिलुङि से शप् के अपवाद से च्लि प्रत्यय, चिल् को सिच् आदेश होकर

गम् धातु लृदित् होने से पुषादिद्युताद्यृलृदितः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् के अपवाद से अङ् प्रत्यय। अङ् के ङ् की हलन्त्यम् से इत् संज्ञा और लोप होकर गम्+अ+ति स्थिति में इतश्च से ति के इ का लोप, लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से अंग को अट् आगम होकर अ+गम्+अ+त् तथा वर्णमेल होकर **अगमत्** रूप सिद्ध होता है।

गम् धातु के लुङ् में रूप- अगमत्, अगमताम्, अगमन्। अगमम्, अगमतम्, अगमत। अगमम्, अगमाव, अगमाम।

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - (वृद्ध्यभावपक्ष में) अपठीत्, अपठीष्टाम्, अपठीषुः। अपठीः, अपठीष्टम्, अपठीष्ट। अपठीषम्, अपठीष्व, अपठीष्म। (वृद्धि) पक्ष में) अपाठीत्, अपाठीष्टाम्, अपाठीषुः। अपाठीः, अपाठीष्टम्, अपाठीष्ट। अपाठीषम्, अपाठीष्व, अपाठीष्म।

2. **जप व्यक्तायां वाचि** - (वृद्ध्यभावपक्ष में) अजपीत्, अजपीष्टाम्, अजपीषुः। अजपीः, अजपीष्टम्, अजपीष्ट। अजपीषम्, अजपीष्व, अजपीष्म। (वृद्धि) पक्ष में) अजापीत्, अजापीष्टाम्, अजापीषुः। अजापीः, अजापीष्टम्, अजापीष्ट। अजापीषम्, अजापीष्व, अजापीष्म।

3. **गद व्यक्तायां वाचि** - (वृद्ध्यभावपक्ष में) अगदीत्, अगदीष्टाम्, अगदीषुः। अगदीः, अगदीष्टम्, अगदीष्ट। अगदीष्म्, अगदीष्व, अगदीष्म। (वृद्धि) पक्ष में) अगादीत्, अगादीष्टाम्, अगादीषुः। अगादीः, अगादीष्टम्, अगादीष्ट। अपगदीषम्, अगादीष्व, अगादीष्म।

4. **टु नदिँ समृद्धौ** - अनन्दीत्, अनन्दीष्टाम्, अनन्दीषुः। अनन्दीः, अनन्दीष्टम्, अनन्दीष्ट। अनन्दीष्म्, अनन्दीष्व, अनन्दीष्म।

5. **व्रज गतौ** - अव्राजीत्, अव्राजीष्टाम्, अव्राजीषुः। अव्राजीः, अव्राजीष्टम्, अव्राजीष्ट। अव्राजीष्म्, अव्राजीष्व, अव्राजीष्म।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. इडादि सिच् परस्पैपद परे इगन्तांग को वृद्धि किस सूत्र से होती है?
2. अनिडादि सिच् परस्पैपद परे इगन्तांग को वृद्धि किस सूत्र से होती है?
3. अनिडादि सिच् परस्पैपद परे अदन्तांग को वृद्धि किस सूत्र से होती है?
4. इडादि सिच् परस्पैपद परे हलन्त अच् को वृद्धि किस धातु को होती है?
5. इडादौ सिचि परस्पैपदेषु का अपवाद कौन है?

6. इडादि सिच् परस्मैपद परे हलन्त अच् को वृद्धि किस सूत्र से निषेध होता है?

7. नेटि से वृद्धिनिषेध का नित्यापवाद किस सूत्र से होता है?

8. कट् धातु का अर्थ क्या है?

9. अगमत् में च्लि को अङ् किस सूत्र से होता है?

10. अगमत् रूप किस लकार में होता है?

    1. लङ् 2. लृङ् 3. लृङ् 4. लुट्

11. अगमत् रूप में च्लि के स्थान पर क्या होता है?

    1. अङ् 2. चङ् 3. सिच् 4. सक्

12. अकटीत् रूप में च्लि के स्थान पर क्या होता है?

    1. अङ् 2. चङ् 3. सिच् 4. सक्

पाठ का सार

इस पाठ में लिङ् लकार और लुङ् लकार के चुने हुए सूत्रों को उपस्थित किया है। आदि में अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र से यकारादि प्रत्यय परे अन्त्य अजन्त अंग को दीर्घ किया गया है। यह दीर्घ कृत्प्रत्यय परे और सार्वधातुक परे नहीं होता। उससे क्षीयात् रूप सिद्ध होता है।

लुङ् लकार में विद्यमान पर सिच् के, अस् धातु के अपृक्त हल् को ईट् का आगम अस्तिसिचोऽपृक्ते सूत्र से होता है। इट् व ईट् के मध्य सिच् हो तो उसका लोप इट ईटि सूत्र से होता है। सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वाच्यः वार्तिक से सिच् लोप सिद्ध होने से अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र प्रवृत्त होता है। झेर्जुस् सिजभ्यतविदिभ्यश्च सूत्र प्रवृत्त होते हैं। इसप्रकार विविध कार्य इस पाठ में प्रदर्शित किये गये हैं।

पाठांत प्रश्न

1. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः सूत्र की व्याख्या कीजिए।

2. अस्तिसिचोऽपृक्ते सूत्र की व्याख्या कीजिए।

3. क्षीयात्, क्षीयास्ताम्, क्षीयासुः। आतीः, आतीत्, आतीषुः, आतीष्टाम् को ससूत्र सिद्ध कीजिए।

4. सिचिवृद्धिः परस्मैपदेषु सूत्र की व्याख्या कीजिए।

5. वदव्रजहलन्तस्याच: सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. अतो हलादेर्लघो: सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. लिङ् सिच् में वृद्धि प्रकरण का सार लिखिए।
8. अकटीत् अकटिष्टाम् कटी: अकटीष्म को ससूत्र सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घ:।
2. विद्यमान पर सिच् के, अस् धातु के अपृक्त हल् को ईट् का आगम होता है।
3. इट ईटि ।
4. इट ईटि।
5. सिजभ्यतविदिभ्यश्च।
6. 3   7. 3   8. 3

19.2

1. सिचिवृद्धि: परस्मैपदेषु।   2. सिचिवृद्धि: परस्मैपदेषु।
3. न केनापि सूत्रेण।
4. परस्मैपदपरक सिच् परे हो तो वद् व्रज् तथा हलन्त अंगों के अच् के स्थान पर वृद्धि आदेश हो।
5. हकारान्त, मकारान्त, यकारान्त, क्षण् धातु, श्वस् धातु, जागृ धातु, ण्यन्त, श्वस् धातु तथा एदित् अंग को वृद्धि नहीं होती यदि इडादि सिच् परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो।
6. नेटि।   7. ह्ययन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्।
8. वर्षावरणयो: कट।   9. पुषादिद्युताद्यलृदित: परस्मैपदेषु।
10. 2   11. 1   12. 3